कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 16-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

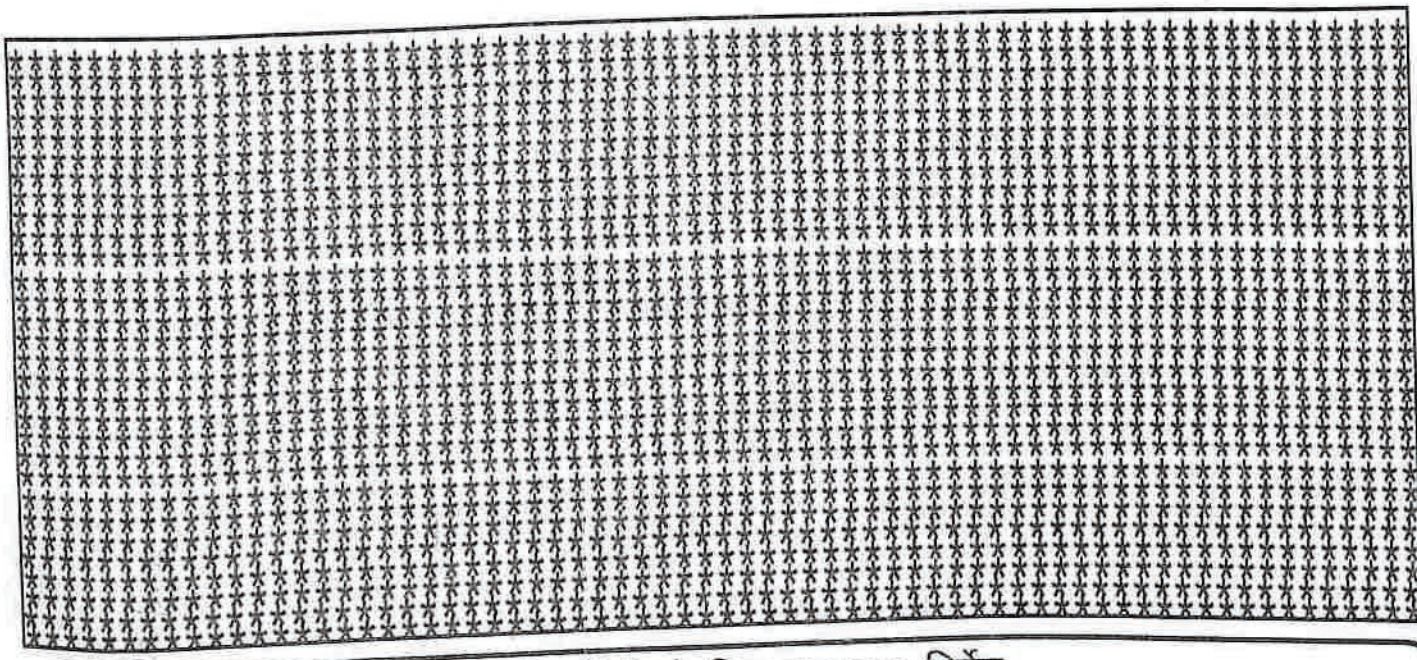

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ट पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्यामेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1	उपयुक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक नारी शक्ति का महत्व है।
	2.	नारियां शिक्षा के प्रचार-प्रसार से वे पूरी तरह आत्मविश्वास से भर गई।
	3.	आधुनिक नारी में शक्ति और साहस से परिपूर्ण है। गांधीजी के आह्वान के कारण नारियां अपने घर-बार छोड़कर आजादी के लिए निकल पड़ी थी। गांव, कस्बो, शहरो एवं महानगरो की सभी शिक्षित व अनपढ़ नारियां पुरुषो के साथ-कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी।
	4.	कविता मे ऐसे आदमी को जगाने के लिए कहा गया है जो आलसी व केवल कोरी कल्पनाओ मे मग्न है।
	5.	अगर आदमी समय जागेगा तो सारी दुनिया आगे बढ़ कर सफलता को प्राप्त कर चुकी होगी और वह पीछे रह जाएगा, इसलिए आदमी को वक्त पर जागना आवश्यक है।
	6.	घबरा के भागने की गति वह है जिसमे व्यक्ति समय जागरूक होकर बेचैन होकर भागता है। जबकि शीघ्र गति वह है जो सही समय पर जागरूक होकर आराम से सफलता की ओर जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

8

कार्यालय : तहशीलदार, भीण्डर (उदयपुर)
क्रमांक : तह. भी. /उद. / जल. /19/16 दिनांक-16मार्च
प्रेषित : सेवा मे,
जिलाधीश, उदयपुर
विषय : जलसंकट के कारण अतिरिक्त बजट के लिए
मान्यवर,
उपरोक्त विषयान्तर्गत सादर निवेदन है कि भीण्डर तहशील मे इस वर्ष भयंकर अकाल पड़ा जिसके कारण तहशील मे जलसंकट की समस्या उत्पन्न हो गई है। जिसके कारण जन समुदाय व पशुओ को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- जलसंकट के कारण लोगो के पास पीने के लिए पानी की कमी है। जलसंकट के कारण कई पशुओ की मौत हो चुकी है। अत: आप इस समस्या का गहन अध्ययन करे। आप इसके लिए अतिरिक्त बजट पेश करावे।
- अत: आपसे करबद्ध निवेदन है कि आप जलसंकट के कारण जल की व्यवस्था करने हेतु अतिरिक्त बजट पेश करावे जिससे इस समस्या से छुटकारा मिल सके।

तहशीलदार
भीण्डर

संलग्न - जलसंकट की रिपोर्ट
क्रमांक - तह. भी. / उद. / अति. बज. /19/16
तहशीलदार

तहशीलदार
भीण्डर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - 3

9. क्रिया ⇒ वे शब्द जो किसी कार्य को करने या होने का बोध कराएँ, क्रिया कहलाते हैं।

कर्म के आधार पर भेद

i) सकर्मक क्रिया

ii) अकर्मक क्रिया

10 (पत्र मोहन के द्वारा लिखा गया)

कारक - करण कारक (के द्वारा के योग में)

काल - भूतकाल (सामान्य भूत)

वाच्य - कर्मवाच्य

11. गजानन - बहुव्रीहि समास

विग्रह - बहुव्रीहि समास में कोई पद प्रधान नहीं होता जबकि अन्य पद अर्थात् बाहर का पद प्रधान होता है।

12

क) मुझे अभी जाना है।

ख) मेरे पास मात्र पचास रुपये हैं।

13

क) अगर-मगर करना - बहाना बनाना

ख) आपे से बाहर होना - वश में न रहना

14

अंधेर नगरी चौपट राजा - अयोध्या प्रसाद

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या
	15

परीक्षार्थी उत्तर

बुझत स्याम ------- राधिका गोरी।

संदर्भ एवं प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी क्षितिज के अध्याय सूरसागर से संकलित है। इसके रचयिता सूरदास है।

- प्रस्तुत पद्यांश मे श्रीकृष्ण राधा से परिचय करके उसे अपने साथ खेलने के लिए आमंत्रित करते है कि-

व्याख्या ⇒ कवि सूरदास श्रीकृष्ण व राधा के बीच की बातचीत का वर्णन करते हुए कहते है कि- श्रीकृष्ण एक दिन बृज की गलियो मे जा रहे थे तभी उन्होंने पहली बार राधा को देखा और परिचय करवाने के लिए पूछा है! गोरी (सुंदरी) तुम कौन हो? कहाँ रहती है और किसकी बेटी हो? तुमको कभी बृज की गलियो मे नहीं देखा। राधा प्रत्युत्तर मे कहती है कि हम बृज की गलियो मे किस कारण आवे। मैं तो अपने घर की दहलीज पर ही खेलती रहती हूँ।

- राधा फिर कृष्ण को कहती है कि हाँ मैं यह सुनती रहती हूँ कि नन्द बाबा का एक पुत्र है जो माखन और दही की चोरी करता फिरता है। श्रीकृष्ण राधा के प्रत्युत्तर मे कहते है कि हाँ चोर ही सही लेकिन आपका हमसे क्या

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

चुरा लिया। फिर कृष्ण राधा को अपने साथ खेलने के लिए आमंत्रित करते है। सूरदास कहते है कि मेरे प्रभु रसिक है जिन्होंने भोली राधा को अपने बातों से ही आकर्षित कर दिया।

विशेष :- i) कवि ने साहित्यिक बृजभाषा का प्रयोग किया है।
ii) कवि ने परिचयात्मक व संवादात्मक शैली का प्रयोग किया है।
iii) 'करत फिरत' मे अनुप्रास व बज-खोरी मे रूपक अलंकार का प्रयोग।
iv) पद्यांश मे श्रीकृष्ण राधा से परिचित होना चाहते है।

16. स्वतंत्रता सेनानी - - - - - - - - - - बुझाते रहेंगे।

संदर्भ एवं प्रसङ्ग => प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी 'दिगंत' के अध्याय 'अमर शहीद' एकांकी से उद्धृत है। इस पाठ के रचयिता लक्ष्मीनारायण रंगा है।
- प्रस्तुत गद्यांश मे स्वतंत्रता सेनानी द्वारा अपने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के बारे मे बताया गया है कि -

व्याख्या => सागरमल गोपा जेलर को स्वतंत्रता संग्राम मे स्वतंत्रता सेनानी के बारे मे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

बताता है कि- जेलर साहब, स्वतन्त्रता का सेनानी आम का बाग लगाता है। माली जब आम का बाग लगाता है तो उसे मालूम है कि इस आम का अमृत या रस उसे नहीं मिलेगा। फिर भी वह अपनी आने वाली संतानों को सुखी रखने के लिए आम का बाग लगाकर मेहनत करके पौधे को पानी देता है ताकि आगे वाली पीढ़ीयां इसका लाभ उठा सके। स्वतन्त्रता का सेनानी भी माली की भावना ले ओत-प्रोत होकर अपने देश को स्वतंत्र व पीढ़ीयों को सुखी देखने के लिए लड़ता है।

- सागरमल गोपा स्वतन्त्रता सेनानी की तुलना माली व भागीरथ से करता है। गोपा जेलर को कहता है कि भागीरथ जो गंगा को पृथ्वी पर लाया था वह गंगा को अपने लिए नहीं लाया था वह इसलिए गंगा को लाया था ताकि आने वाली सैकड़ों पीढ़ीयां गंगा के पानी पा सके, अपना जीवनयापन कर सके।

विशेष:- 1) लेखक ने आधुनिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
2) लेखक ने माली व भागीरथ की तुलना स्वतन्त्रता सेनानी से की है।
3) लेखक ने भोजपुरी शैली का प्रयोग किया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

17

Ans

'प्रभो' कविता का सार

- 'प्रभो' कविता जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है। इस कविता में कवि प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर का दर्शन करा रहा है साथ ही वह लोगों को ईश्वर के प्रति दृढ़-आस्था व भावना रखने का संदेश देता है। कवि कहता है कि प्रकृति की प्रत्येक वस्तु ईश्वर के बारे में कुछ न कुछ कहती है जैसे

विमल इन्दु की विशाल किरणें
प्रकाश तेरा बता रही।

- कवि ईश्वरीय प्रेम को अभिव्यक्त करता हुआ कहता है कि चन्द्र किरणें ईश्वरीय प्रकाश को बता रही है। कवि ईश्वर को अनादि व अनन्त कहता है क्योंकि ईश्वर प्रकृति से पहले भी विद्यमान था। समुद्र का विस्तार ईश्वर के दया के विस्तार को बता रहा है। समुद्र की विशाल लहरें ईश्वर के ही गीत गा रही है। चन्द्रमा की चांदनी ईश्वर की मुस्कान तथा नदियों की कल-कल ईश्वर की ध्वनि में गीत गा रही है।

प्रेमसय प्रकाश तुम हो
प्रकृति प्रकाशिनी के अंशुमाली

कवि ईश्वर को प्रेम से युक्त प्रकाश बताता है तथा उसको प्रकृति रूपी फूल का सूर्य बताता है। रात में अनन्त आकाश में विचरने वाले तारे एवं आकाशगंगा ईश्वर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

के मंदिर की दीपमालाओं को व्यक्त करती है। कवि ईश्वर को दया के सुन्दर सागर बताता है जिस भी व्यक्ति पर ईश्वर की दया पड़ती है तो इसके सारे मनोरथ पूर्ण हो जाता है।

- कवि के अनुसार प्रकृति की प्रत्येक घटना ईश्वर के निर्देशानुसार होती है।

18 उत्तर

लोकसंत पीपा का जीवन

- लोकसंत पीपा का जन्म 1390 ई. में झालावाड़ के गागरोन दुर्ग में एक खींची राजवंश परिवार में हुआ। पीपा पिता की मृत्यु के बाद राजगद्दी पर बैठे। पीपा कुशल प्रशासक व धीर गंभीर स्वभाव के कारण प्रजा के चहेते थे। पीपा पहले मूर्तिपूजक थे वे देवी दुर्गा की उपासना करते थे। एक बार वैष्णव भक्त मंडली उनके दरबार में आई जिन्होंने पीपा को रामानन्द गुसाईं से मिलने का सन्देश दिया। पीपा का विवाह सीता से हुआ। पीपा की मृत्यु 1470 ई. में गागरोन दुर्ग में हुई। पीपा ने गुरु रामानन्द गुसाईं से दीक्षा प्राप्त कर ली।

लोकसंत पीपा की शिक्षाएं

- पीपा समाज सुधारक के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

साथ-2 भक्त कवि भी थे। वे निर्गुण काव्यधारा के समर्थक एवं मूर्ति पूजा के विरोधी थे। रामानन्द से दीक्षित होने के बाद इन्होंने राजपाट त्याग दिया।

- पीपा आत्मा व परमात्मा को एक मानते थे इनके अनुसार जो आत्मा है वही परमात्मा है। यह पंचतत्व शरीर ही परमात्मा है। वे सांसारिक मोह-माया को पार करने के लिए गुरु की उपस्थिति अनिवार्य मानते थे। ये लोहे और सोने को एक समान मानते थे। इनके अनुसार सभी मनुष्य एक समान है। ईश्वर मनुष्य में कोई भेदभाव नही करता है। समाज में कोई भी क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य व ब्राह्मण नही होता। इन्होंने अपनी भक्ति-भावना से समाज के उपेक्षित वर्ग में आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता जगाकर उन्हें रूढ़िवादियों को तोड़ने को कहा।

जीव मारन जीमण करे, खाता करे बरवान
पीपा परतख देख ले, थाली मांहि मसान

- पीपा हिंसा व मांसाहार के घोर विरोधी थे। इन्होंने अपनी शिक्षाओं द्वारा समाज सुधार एवं दलितों के लिए उत्थान का कार्य किया। पीपा ने राजपाट व वैभव को छोड़कर सन्यासी का जीवन स्वीकार किया था। पीपा राजस्थान के बड़े समाज सुधारक थे। पीपा की भक्ति भावना बोलवाणी का विषय बनी हुई है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19 - उपर्युक्त सोरठा कृपाराम खिड़िया द्वारा रचित 'राजिया रा सोरठा' से संकलित है। प्रस्तुत सोरठे के माध्यम से कवि मधुर वाणी के महत्त्व के बारे में बताते है कि-

- कोयल अपनी मधुर वाणी से लोगो के मन मे प्रसन्नता उत्पन्न करती है जबकि कौए की ध्वनि कड़वी लगती है। कवि इसे यह संदेश देता है कि मनुष्य को हमेशा मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए।

20) - मातृवंदना कविता मे कवि निराला मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने जीवन के सभी उपलब्धियों को जो उसने स्वार्थ व परिश्रम से अर्जित की थी, वे सब समर्पित करना चाहता है।

नर जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हो तेरे चरणों मे माँ संचित फल।

21) - कन्यादान कविता ऋतुराज द्वारा रचित है जिसमे माँ अपनी बेटी को परम्परागत तरीके से हटकर व्यावहारिक शिक्षा देती है। यह कविता स्त्रियों को अत्याचार व शोषण न सहने के लिए प्रेरित करती है। उन्हे आवेश

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मे आकर आत्महत्या न करने, वस्त्रों और गहनों के बंधनों में न पड़ने की शिक्षा देती है। इस प्रकार यह कविता वर्तमान मे प्रासंगिक है।

लड़की होना पर लड़की जैसा दिखाई मत देना

22 - लेखक ने देवालय का विचार इसलिए त्याग दिया क्योंकि उसे मालूम था कि वर्तमान भारतीय सभ्यता पाश्चीकरण की ओर मुड़ रही है जिसके कारण मंदिर कोई नाम्या नहीं जिससे उसका नाम अमर नहीं होगा। लेखक ऐसा करना चाहता था जिससे उसका नाम अमर हो इसलिए उसने देवालय का विचार त्याग दिया।

23. - मोहन राकेश ने 'आखिरी चट्टान' के माध्यम से भारत के सौंदर्य का वर्णन किया है। लेखक कन्याकुमारी जाता है जो हिंद महासागर, अरब सागर व बंगाल की खाड़ी का संगम स्थल है। कन्याकुमारी से सूर्यास्त व सूर्योदय का नजारा अनुपम है। वहाँ के समुद्रतट का दृश्य व रेत ने भी लेखक को आकर्षित किया। कन्याकुमारी मे प्रकृति के सौंदर्य को अनुभव किया जा सकता है। इस आधार पर हम कह सकते है कि भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है। भारत के उत्तर मे हिमालय स्थित है जो अनुपम है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	24	संत दादू ने शिष्यों को मानवीय एकता व जात-पात के आधार पर भेदभाव न करने, दूसरे की निंदा न करने की सीख दी।
	ii)	दादू ने सभी को एक समान मानने की शिक्षा दी। ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्था बनाए रखना, निंदा से दूर रहना।
	iii)	मुस्लिम-हिंदू की एकता का संदेश।
	iv)	दादू ने सांसारिकता से पार लगाने के लिए मोह-माया को छोड़ने आदि शिक्षाएँ अपने शिष्यों को दी।
	25)	दादू के पंचतीर्थ ⇒ कल्याणपुर, सांभर, आमेर, नराणा व भैराणा।
	26)	- संत पीपा रामानन्द से दीक्षित होने के बाद दिन-रात हरि सुमिरन करने लगे। वे राजपाट को अहंकार व भय का कारण मानने लगे इस कारण उनका मन राजकाज से उचट गया।
	27)	- श्याम ने झूला झूलने के लिए नायिका / गोपी को आमंत्रित किया।
	28)	- वर्षा के अभाव के कारण खेतों की मिट्टी पथराई हुई थी।
	29)	महाकवि निराला।
	i)	- छायावादी कवियों में अग्रण्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 1896 ई. मे हुआ। इनका जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले मे हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा हाईस्कूल तक हुई। इन्होंने संस्कृत, हिंदी, बांग्ला का स्वाध्याय किया। प्रथम विश्वयुद्ध की महामारी मे इनके अधिकतर सदस्यों पारिवारिक सदस्यों की मृत्यु हो गई। पुत्री सरोज की मृत्यु ने इन्हें झकझोर कर दिया। इन्होंने अपने काव्यों मे आधुनिक खड़ी बोली का प्रयोग किया। इन्होंने विषम परिस्थितियों मे भी जीवन को अपने ढंग से जीया। इन्होंने मानव की पीड़ा, परतंत्रता के प्रति आक्रोश आदि का मार्मिक चित्रण किया है। इनकी सन् 1961 मे मृत्यु हो गई।

कृतियाँ - अनामिका, परिमल, गीतिका, राम और श्याम

ii) देव

- शाब्दिक कवि देव का जन्म 1730 विक्रम संवत् मे हुआ। इनका जन्म इटावा मे हुआ। इनके वंशज वर्तमान मे इटावा व कुसमुरा मे रहते है। इन्होंने अपने काव्यो मे ब्रजभाषा का प्रयोग किया। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे, इन्होंने अपने काव्यों मे संस्कृत व तद्भव भाषा का प्रयोग किया। ये कृष्णभक्त कवि थे। इन्होंने अपने काव्यो मे अलंकारो का प्रयोग किया। श्लेष अलंकार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

के प्रयोग में वे सिद्धहस्त थे, इनके द्वारा कई रचनाएँ लिखी गए। इनकी मृत्यु विक्रम संवत 1824 को हुई।

कृतियाँ - भावविलास, रसविलास, भवानीविलास देवाविलास

30)

i) एक ही दिशा में प्रवेश

ii) साईकिल पर प्रतिबंध

iii) हॉर्न (ध्वनि) पर प्रतिबंध

iv) चौड़ाई सीमा

7 आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या

प्रस्तावना :- i) पुलवामा में आतंकी हमला पर जवान शहीद

ii) उड़ी में आतंकी हमला 19 जवान शहीद

iii) पाक की बर्बरता कारे २ सैनिकों के सिर

iv) भारतीय संसद पर आतंकी हमला

- ये कोई सामान्य खबरे नही है बल्कि ये रोजाना अखबारों के मुख्य पृष्ठ मे पर छपने वाली खबरे है। आतंकवाद सब जगह फैल चुका है। आतंकवाद से विश्व के सभी देश त्रस्त है यह एक ऐसी महामारी है जो एक दिन सम्पूर्ण विश्व को नष्ट

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कर देगी। आज हम विश्व के प्रत्येक देश से आतंकी घटनाओं के समाचार सुनते है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि

ऐसा नही है कि नाव ही खतरे मे है
जबकि और ऐसा है कि सारी नदी ही खतरे
मे है।

आतंकवाद की परिभाषा => आतंकवाद की परिभाषा हम उस प्रत्येक घटना से दे सकते है जिसमे खूंखार व स्वार्थी लोगों द्वारा अपने स्वार्थ को पूर्ण करने के लिए भयंकर हमले करते है। ये संकीर्ण विचारधारा वाले लोग होते है जो अपने मजहब व अपनी कौम के नाम पर संसार के सभी लोगों को कष्ट पहुंचाते है। ये अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए कई भयानक विकल्पों को चुनते है जैसे नरहत्या करना, लोगों के गले काटना बम से अधिक आबादी वाले इलाकों को उड़ाना आदि इस प्रकार की कई घटनाएं घटित होती है। आतंकवाद वर्तमान मे एक भयानक बीमारी है।

मजहब के नाम पर आतंकियों को खून
नए-नए चेहरों मे छिपाती जुनून
क्या खूब स्वागत है इस सदी का
मौत की स्याही से लिखा जाता है
सुकून।

वर्तमान मे यह कहना अतिश्योक्ति नही होगी,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

आंतकवाद के उद्देश्य ⇒ आंतकवादी मनुष्य अपनी जरूरतो व स्वार्थ को पूरा करने के लिए विभिन्न हथकंडे अपनाते है।
आंतकवाद के उद्देश्य निम्न है -

i) अपने मतलबी स्वार्थ को पूरा करना
ii) विश्व मे सभी देशो को अपने कब्जे मे करना।
iii) लोगो मे विभिन्न प्रकार के भय को उत्पन्न करना।
iv) आतंकी हमले करके किसी देश के विकास को अवरुद्ध करना।
v) लोगो पर जुल्म करके इनको अपने वश मे करना।
vi) लोगो को कई अमानवीय यातनाए देना।

आदि कई प्रकार के आंतकवाद के उद्देश्य है। आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या है।

आंतकवाद को नियंत्रित करने के उपाय ⇒ यद्यपि कोई भी व्यक्ति जन्मजात आतंकी नही होता है फिर भी समाज मे कुछ ऐसी घटनाए घटित हो जाती है जिसके कारण व्यक्ति को मजबूरन इस रास्ते पर जाना पड़ता है। फिर भी हमे आतंकवाद को नियंत्रित करने हेतु निम्न उपाय अपनाए जाने चाहिए -

i) देश मे बेरोजगारी एवं गरीबी को कम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

करके लोगों को अधिकाधिक रोजगार देना चाहिए।

ii) लोगों को स्वरोजगार के लिए ऋण उपलब्ध करवाना चाहिए।

iii) सभी राष्ट्रों को आतंकवाद के खिलाफ संगठित होना चाहिए।

(iv) सभी राष्ट्रों को मिलकर आतंकवाद के खिलाफ कदम उठाने चाहिए।

v) आतंक को पनाह देने वाले लोगों व देशों को अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी से पृथक करना चाहिए।

तन की हवस मन को गुनहगार बना देती है
ख्वाब के ख्वाब को भी बिगाड़ देती है।
भूखे पेट को देशभक्ति सीखाने वालो,
भूख इंसान को गद्दार बना देती है।

आतंकवाद का इतिहास => आतंकवाद प्राचीनकाल से चला आ रहा है। प्राचीनकाल में लोग राक्षस प्रवृति के होते थे वे लोगों को हानि एवं कष्ट पहुंचाते थे। वर्तमान में मानव अदृश्य राक्षस के रूप में आतंकवाद को बढ़ा रहा है। समाज व व्यक्ति लोगों को अपमानित करके व अत्याचार करके उन्हें आतंकी बनने में मदद करते है। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान भी आतंकियों को पनाह दे रहा है जिसका खामियाजा उनको भुगतान पड़ रहा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उपसंहार ⇒ यद्यपि आतंकवाद केवल विश्व-व्यापी समस्या है। आतंकवाद सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। प्रकृति ने ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका हल न निकल सके। इसके लिए लोगों को संगठित होना पड़ सकता है। आतंकवाद का अगर हल नहीं निकला तो वह सम्पूर्ण विश्व को निगल जाएगी। अमेरिका की तरह भारत को भी आतंकवादियों के खिलाफ ऑपरेशन करना चाहिए।
इस प्रकार हम कह सकते है कि
हम वारियर है हमें अपना हुनर मालूम है।
जिस तरफ चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा।

समाप्त

समाप्त